R.N.I.- UP-HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 24वें वर्ष में प्रवेश

संयम • संस्कार • सन्तुलन

शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

www.shaharsamta.com

शोध पत्र

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

वर्ष 24 अंक 31 रविवार, इलाहाबाद, 29 दिसम्बर 2024 पृष्ठ 4 विशेषांक मूल्यः 3 रू0

संपादकीय

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

वर्ष बीत गया कविता में रवानी है ,
हर कविता में नई-नई कहानी है ।
इसको देखूँ उसको देखूँ बात पुरानी है ,
अब दिखती है हर कविता में ।
नई-नई जवानी है ।

तो बात हो रही है महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक की ।न्सरस, सरल और सुबोध विचारों से लबरेज नारी मन की बातों का अपना ही अलग अंदाज होता है। कोमल, मनभावन रचनाओं के माध्यम से नारी मन दर्पण जो रचता है वह बड़ा ही पावन और पवित्र होता है । यथार्थ के धरातल

से उठाई गई बातों को अपनी कविता के माध्यम से कह देना आज की कविताओं की विशेषता है। यथार्थ अलंकार में कही गई कविताओं का रसास्वादन ही और होता है ।

महिला काव्य गोष्ठी के इस इस बार की रचनाओं की कुछ बानगी देखिए

दिल को अपनी खबर नहीं होती ,
शाम-ए-ग़म की सहर नहीं होती ।
गिरते हुए भी सम्भलो, ज़माने वालों,
दुश्वारियों से दुनिया महफ़ूज़ नहीं होती ।

दूसरी बानगी

बटोही के पैरों तले रौंदें गए ,
जीर्ण-शीर्ण कुछ पत्ते कराह रहे हैं।
पड़े पड़े किसी तरह देख रहे हैं ,
अर्थ मुदित आंखों से उस पेड़ को ।

तीसरी बानगी

मौनता में खड़ा मनुज, मौनता में ताकता ।
देख अपनी ओर, क्यों नहीं धिक्कारता।
है धरा पर क्यों, अश्रु बीज बो रहा ।
अबला अश्रु से निज धरा डुबो रहा ।

इस बार की पुरस्कृत रचना रचना सक्सेना की है । रचना पढ़िए और बताइए कि यह अंक आपको कैसा लगा, प्रक्रिया जरूर दें ।

अंत में

नए वर्ष का नया सवेरा ,
कितना सुंदर प्यारा है ।
है अतीत की बात पुरानी ,
अब तो नया उजाला है ।

उमेश श्रीवास्तव

पुरस्कृत रचना

ग़ज़ल

इस तरह हर तरफ़ नज़र रखिए,
इस ज़माने की सब खबर रखिए ।

आसमाँ तुमने छू लिया फ़िर भी,
पाँव अपने ज़मीन पर रखिए।

लोग मिलते रहे बिछड़ते भी,
आप जारी यहाँ सफ़र रखिए।

दूरियाँ मिटती पास आने पर,
पास अपने यही हुनर रखिए।

चाहती गर दुआ मिले 'रचना',
माँ के क़दमों में अपना सर रखिए।

रचना सक्सेना

कवितायें

आंसू

दो बूंद आंसू ही तो है जो सुर्ख आंखों से निकल दिल के दास्तान-ए-दर्द कह जाती है ।
टूटे हुए अरमानों के मंजर बयां कर जाती है । उन्हें प्रवाह कहा कि कोई आंसू बहा रही है । दर्द, जुदाई,और गमों के समंदर में डूबती जा जा रही है ।
वह तो बेपरवाह अपनी दुनिया में मशगूल खुशियां मना रही है । किसी के दर्द का एहसास कहां आ रही है ?

लेकिन एक दिन उन्हें उन आंसुओं के हिसाब तो चुकाना ही पड़ेगा। हर ग़म और आंसुओं की कीमत अदा करना ही पड़ेगा ।।

सैयदा आनोवारा खातुन । विश्व नाथ (असम)

मैं आज की नारी हू

मैं आज की नारी हूं
मैं गांधारी नहीं बनना चाहती
आंखों पर पट्टी जो अप्रिय,
असहनीय होती है
प्रकाश की आवश्यकता अपरिहार्य है
दुनिया कभी नहीं रुकती,
अँधेरे को गले लगाना
प्रकाश को नष्ट करना ।
नहीं! यह अंतरात्मा की
अनुमति के विरुद्ध है.
मैं धृतराष्ट्र की विकलांगता
स्वीकार करूंगा
सादरपूर्वक...
मैं अँधेरे में तैरूँगा,
गलतियाँ भी क्षम्य हैं,
हालाँकि, तर्जनी हमेशा उठी रहेगी
क्योंकि जीवन के सागर में
मैं डुबना नहीं मारना चाहता.
पतिव्रता होने का प्रमाण
अनावश्यक है
बस आत्मा की सहमति की
आवश्यकता है

अब तुम्हें गंधार
वेदनाक्लिष्ट नहीं होगा
अनैतिकता का विरोध होगा
जीवनधारा एक जीवन संघर्ष होगा
जिम्मेदारी का दायित्व उठाने के लिए
वासुदेव हामारी साथी बनें
क्योंकि मैं गांधारी नहीं हूं
आज की नारी हूं..

रीतामणि डेका भराली

जंजाल में आदमी

वफादारी मेरे अंदर नहीं
कुत्ता मैं पाल रहा
शहरी हूं, कहलाना भी
जी का जंजाल रहा।
दफ्तर से लौटने पर
हाट खोजता फिरा
जिप थी, खुली नहीं
धोती के आर पार तो
हवा को रास्ता रहा
गांव भीतर लिए
मैं शहर के बीच रहा
शहरी हूं, कहलाना भी
जी का जंजाल रहा।
अंगूठा छाप नहीं हूं
हस्ताक्षर पर गर्व है
ताऊ की कहानियों में
उफ्फ! कितना दर्द है
हर शाम एक चौपाल सी
मैं हुक्का बन जला
शहरी हूं, कहलाना भी
जी का जंजाल रहा।
धूल थी जूतों पर
मैं सबसे छुपता फिरा
बचपन तेरी गलियों में
मैं नंगे पांव भी नही जला
मिट्टी की गुल्लक मेरी
खाली ही टूट गई
लोहे का अकाउंट भी
अब तलक नही भरा
शहरी हूं, कहलाना भी
जी का जंजाल रहा।
समेट, सब निकल जाऊंगा कभी
मूछों का ताव
खलल डाल देता तभी
लिफ्ट के चस्के में
मेड़ों से वास्ता ना रहा
शहरी हूं, कहलाना भी
जी का जंजाल रहा।

तुलसी छेत्री
उदालगुड़ी,असम

लाख चाहा भी तो

लाख चाहा भी तो
एक बार नही कर पाए
अपनी चाहत का
हम इज़हार नही कर पाए।।

रतजगे मुझको मयस्सर हैं
अभी तक यारों।
रब क़सम उनका जो
दीदार नही कर पाए।।

हसरते ख़ाक हुई
ख्याब अधूरे निकले।
उन से आँखे कभी
चार नही कर पाए।।

ज़िंदगी हम तेरे ममनून बहुत हैं
लेकिन।
हाँ मगर तुझ से कभी
प्यार नहीं कर पाए।।

घर से निकली हूँ
दुआओ का उजाला लेकर।
ये अंधेरे मेरा
कुछ यार नही कर पाए।।

दर्दे दिल तुझको

कवितायें

बहुत प्यार से पाला हमने।
तुझको रुसवा सरे बाजार नही कर पाए।।

गोताज़न लाख हुए इश्क के दरिया में अज़ीज़।
इश्क का दरिया मगर हम पर नही कर पाए।।

अफ़रोज़ अज़ीज़
दिल्ली

दिल को अपनी खबर नहीं होती

दिल को अपनी खबर नहीं होती
शाम-ए-ग़म की सहर नहीं होती

गिरते हुए भी सम्भलो, ज़माने वालों
दुश्वारियों से दुनिया महफ़ूज़ नहीं होती

तन्हा है सफर, मंज़िल भी नहीं पास
हर रात, चाँद-तारों की क़नात नहीं होती

बड़ी मुश्किल से मिटता है पेशानी का लिखा
मुक़द्दर किसी की रोशन सरे-राह नहीं होती

गुनाह से कर तौबा, दिले-क़ाफ़िर जरा सम्भल
ज़मीर-ए-जाँ मयस्सर सब को नहीं होती

खफ़ा हुए, जुदा हुए, बर्बाद हो गये हम
ख्वाबों में भी भूले से मुलाकात नहीं होती डॉ. रश्मि झा

नग्न पेड़

बटोही के पैरों तले रौंदें गए
जीर्ण-शीर्ण कुछ पत्ते कराह रहे हैं,
पड़े पड़े किसी तरह देख रहे हैं
अर्ध मुदित आंखों से उस पेड़ को
जिस पेड़ ने कभी उन पत्तों पर
बहुत ही आकर्षक प्यारे प्यारे वादे लिखे थे
और आश्वासन देकर हस्ताक्षर किया था।
आज वे भू लुंठित हैं,पद दलित हैं,कराह रहे हैं;
लेकिन उस पेड़ को न तो उनसे कोई हमदर्दी है
न ही वह अपनी नग्नता पर लज्जित है।
वह तो बेसब्री से अगला वसंत का इंतजार कर रहा है।
किसी से सरोकार नहीं रखता वह स्वार्थी पेड़
उसे तो खुद पल्लवित होने से मतलब है ।

गीता लिम्बू
शिलांग 6

मिलन

ढलने लगा है सूरज
अब तक बादलों संग
चल रही थी लुकाछिपी
धीरे-धीरे उतर रही है
संध्या सुन्दरी
हौले-हौले हिल रही हैं
टहनियाँ, पत्तियाँ
झर रहे कुसुम
थिरक रही है षोडसी
वायलिन की धुन पर
लौट रहे पंछी अपने नीड़ों में
सौंप कर तारों का आँचल
संध्या मुस्कुरायी
गहरायी स्तब्धता
रजनीबाला सकुचायी
निरख झील में छवि चाँद की
तनिक शरमायी
सजा तारक-वृन्द
ले जुगनुओं की बारात
अपनी विरहणी का
खोल अवगुंठन
प्रिया को किया आलिंगनबद्ध
सुगन्ध बिखेरती रातरानी
पारिजात का सजा सेज
इंगित करते अटूट प्रेम
विरह-मिलन का अद्भुत खेल।

डॉ अनीता पंडा 'अन्वी'

सर्दी की एक शाम, चाय के नाम

आओ गुफ़्तगू करें।
सर्दी की एक शाम है,
चाय के नाम है।
आओ, कुछ बातें करें।
चाय लिए हाथ में,
कुछ पलों के साथ मे ,
कुछ तुम कहा ,
कुछ हम कहें ,
दिल के बोझ हल्का करें।
ज़ीस्त यूँ ही चला करे ।
चाय लिए हम मिल बैठें ,
दूरी को कुछ कम करें ।
कुछ तुम कहो, कुछ हम कहें ।
गयी बात का न ग़म करें।
बेज़ार चेहरों को
खुशनुमा हम करें ।
समां ये रोज आयेगा नही
कुछ अनकही बातों को
हम आज कहें ।
आओ गुफ्तगू करे।
सर्दी की इस शाम को,
चाय के नाम करें ।
आओ गुफ़्तगू करें ।। दया शर्मा

शिलांग (मेघालय)

उम्र

ढाई अक्षर का शब्द ये,
अनगिनत भावों, एहसासों,
को लिए,
खट्टे, मीठे, कड़वे तजुर्बों के साथ,
ढलती है या बढ़ती,
दिन प्रतिदिन,
ये उम्र।
घुटनों के बल रेंगती,
उंगली पकड़ चलना सीखती,
ताउम्र भाग दौड़ करती,
थक जाती अंत में,
फिर सहारा ढूंढती,
कभी उंगली, कभी लाठी संग,
धीरे धीरे चलती, ये उम्र।

रीढ़ की हड्डी बन,
खड़े रहना अपनों के संग,
जूझना हर आंधी तूफान से,
बोझ ढोती जिन कंधों के सहारे,
निभाते जिम्मेदारियां,
झुक जाते वो कंधे,
झुक जाती लचकती कमर,
जिंदगी का सफर तय करती,
ये उम्र।

मासूम सा चेहरा,
खिलता यौवन संग,
समेट सुख-दुख के अनुभव,
देख अपने परायों को,
बन जाती झुर्रियां तजुर्बों की,
बालों की सफेदी,
कंपकपाना हाथों का,
यादाश्त को धुंधला देती,
गौर से देखकर पहचानती,
रोटी के निवाले को देर तक चबाती,
समझ नहीं आता,
ढलती है या बढ़ती है,
दिन प्रतिदिन,
ये उम्र।।

नीता शर्मा,
शिलोंग, मेघालय

प्रेम का उत्सव

मधुर कूक गूंजे कोयल की ,
मंद चले पुरवाई।
प्रेम का उत्सव साथ मे लेकर
सिया राम विवाह की बेला है आई।

हरी भरी सी वसुंधरा है,
गीत मृदंग बजते हैं मन मे।
सुंदर पुष्प बिखेरें खुशबू ,
चहचहाते पंछी वन में।
धरा के हाथों में सृष्टि ने
मेहंदी आज रचाई।
सिया राम विवाह की बेला हैं आई।
मंगल शुभ बेला किया राम ने जानकी ब्याह।

बगिया मेरे आंगन की ।
रंगों के त्यौहार का मानो
सन्देशा भर लाई।
प्रेम का उत्सव साथ मे लेकर
सिया राम विवाह की बेला है आई ।

सुंदर उपवन सा लगे स्वर्ग सामान।
चंद्रमा की शीतल किरणें मन को मोहित करती
रात्रि में स्वर्णिम किरणें आच्छादित करती।
खुशियाँ बहती नैन परिमल ने अपार
प्रेम का उत्सव साथ में लेकर
सिया राम विवाह बेला है आई।

उमा मिश्रा प्रीति
जबलपुर मध्य प्रदेश

भारत सर्वधर्म समभाव यहा पर,

भारत की जन-जन में है।
मनसा , वाचा, कर्मणा
के भाव हमारे मन में है।
यही विवेकानंद हुए थे, दिया विश्व को ज्ञान।
जगतगुरु कहलाता है,
है अपना भारत महान।
गौरव भारत के अतीत का,
वापिस आ सकता है अपना।
अब तक जो केवल सपना है,
पूरा हो सकता है अपना।

अनीता दुबे

अब न बहकना

हरिहर चरनन , शिव भज हर
जन , हरषत रह मन , भगत चहकना ।
भसम लिपट अंग , चमकत नवरंग ,
पियत -पियत भंग , अब न बहकना ।। धरम
- करम कर , बम - बम कह नर , चरण
शरण धर , नयन छलकना ।
तिमिर तमस तज , शिव कह सज धज , हवन
मनन यज , सुगम समझना ।।

शिव - शिव ध्वनि धुन , जपत मुदित सुन ,
सकल गुनन गुन , शिव मय बनना । हरदम
हरपल , शुभ पथ पर
चल , बढ़त रहत बल , प्रभु उर बसना ।।

प्रभु भज हरदम , तज कर हर गम , शुचि
हिय धर शम , जग हित करना ।

सदय हृदय रख , शुभ फल रस चख , भजत
शिवम लख , शिव जय कहना ।।

डॉ कुमकुम शुक्ला

दीपोत्सव

प्रेम, अपनत्व, संस्कृति भरे अंतर्मन हो सबके,
खुशियों के पर्व, अपनो के संग,
मंगलमय हो सबको.,
प्रेम पुष्पके तोरण,
अक्षत से समर्पित भाव सबके,
दीपावली का ज्योतिर्मय
पर्व मंगलमय हो सबको,
आलौकिक आभा से,
प्रकाशित हो जीवन सबके,
धन, धान्य मिले, तन वस्त्र ढके,
छत्रछाया मिले सबको,
धन्वंतरि की कृपा दृष्टि,
आरोग्य, स्वस्थ जीवन हो सबके,
सृजन, मनोनयन, सुस्ज्जित
विचारधारा हो सबकी,
ज्ञान, संस्कार, सद्भाव वैभव,
समृद्धि मिले सबको,
लक्ष्मी, कुबेर संग,सरस्वती बुद्धि,
विवेक,मे ज्ञान भरे सबके.,
श्रंगारित रांगोळी सा रंगमय
लक्ष्य हो जीवन मे सबके,
दीपावली की शुभ बेला में
शीतल आभास मिले सबको,
प्रीत, रित से आल्हादित
दीपावली मिलन पर्व हो सबके..

आरती शर्मा
जबलपुर मध्य प्रदेश

आई हैं दुर्गा

पायल बजाती चूड़ी खनकाती आई हैं
दुर्गा भवानी संग चले महाकाली।
पीले शेर पर दुर्गा आई
श्वेत हंस पर शारदा आई
लक्ष्मी गरुण सवारी संग चले महाकाली ।
दुर्गा के हाथों त्रिशूल विराजे चक्र लक्ष्मी के
हाथों में साजे खप्पर ले
महाकाली संग चले महाकाली ।
भक्तों ने गरबा रास रचाया जयकारों से मां को
मनाया मैं भी नाचूं
दे ताली संग चले महाकाली रचना सक्सेना
जबलपुर

दीपावली पर्व गीत

दिशा दिशा में दीप जलाते, डर जाता
अँधियारा।
झिलमिल झिलमिल घर आंगन है ,जगमग
है चौबारा।

प्रथम दिवस धनतेरस को
हम रमा गजानन लाते।
खील बताशे भोग लगा हम
दुर्वा पुष्प चढ़ाते।।
चंदन तिलक लगा पूजन कर,
पुष्प माल पहनाते।।
घी का चौदह दीप जलाकर
आरती संग संग गाते।
कर सत्कार गजानन लक्ष्मी,
आशिष उनसे पाते ।
धन वर्षा की आशा में
मन होता प्रफुल्ल हमारा।
श्रद्धा भक्ति की धारा मन में ,
करते सत्कार तुम्हारा।।

द्वितीय दिवस है नर्क चतुर्दशी,
धन्वंतरि ऋषि अवतारे।
औषधि दे कर दूर करें ,
रोग दोष दुख सारे।।
रूप चतुर्दश को सज-धज के
निखरे गात हमारे।
तोरण वंदनवार रंगोली,
सज जाते घर द्वारे।
दे उपहार गले हैं मिलते,
रिश्ता सभी संवारे।।
सतरंगी फुलझड़ी पटाखों से
गुंजित जग सारा।।
दीपावली सबसे जग में
पावन पर्व हमारा।।

पंचम दिन श्री चित्रगुप्त जी,
मां वाणी साथ बिठाएं।
कलम दवात की पूजा कर के,
विद्या अपनी जगाएं।।
भाई दूज में भाल तिलक कर
उसकी कुशल मनाएं।
नव उर्जा नव स्फूर्ति से प्रमुदित तन,
टूटे मन की कारा।
मानुष मन है स्नेहिल बाती ,
दीपोत्सव है प्यारा।।

मनोरमा श्रीवास्तव 'मनोरम'

ग़ज़ल

1) गमों से हुई जबसे यारी लगे
मुझे ज़ीस्त अपनी ही भारी लगे
2) सँभल के ही चलना बुरा वक़्त है
ये तलवार जैसा दुधारी लगे
3) सभी की नज़र है बदन पर मेरे
जिसे देखती हूँ शिकारी लगे
4) नए ज़ख्म देता है जो बार बार
मुझे बात उसकी ही प्यारी लगे
5) बिना तेरे गुलज़ार होती नहीं
मुझे ज़ीस्त अपनी उधारी लगे
6) जिसे सोचकर मुझको मिलता सुकूँ
तेरी वो हरिक याद प्यारी लगे
7) जिधर देखती हूँ बड़ा दर्द है
ये दुनिया ग़मों की ही मारी लगे
8) तेरे होंठों पे गर हँसी देखे 'अनु'
गुलों की खिली एक क्यारी लगे

अनीता सिंह 'अनु'

ग़ज़ल

1) जुस्तजू प्यार की आप कर लीजिए
इश्क़ में बंदगी आप कर ली जिए
2) ज़िंदगी फीकी लगती हँसी के बिना
बातें कुछ चुलबुली आप कर लीजिए
3) ऐसी संजीदगी हो रही बे-मज़ा
थोड़ी दीवानगी आप कर लीजिए
4) आपसे दोस्ती टूट सकती नही
बेवजह दुश्मनी आप कर लीजिए
5) मेरी मौजूदगी गर अखरने लगे शौक़ से
बेदिली आप कर लीजिए
6) हमको तनहाइयां रास आने लगी
शामे अपनी हसीं आप कर/केली जिए
7) आपके हाथ है प्यार का फ़ैसला
अपनी मनमानी जी आप कर लीजिए

शिवानी चंद्रा

एक वो भी दिवाली था

एक वो भी दिवाली थी
एक ये भी दिवाली है।
1-आँगन में खुशियों के जब फूल झड़ा करते
नित नए त्योहारों के सुख साज बजा करते
अब सब सुख अपने हैं मन खाली खाली है
एक वो .....
2जहाँ हर पल यादों का संसार बसा करता।
बिन माँगे मुरादों का अम्बार लगा करता।
अब शक के घेरे हैं हर कोई सवाली है।

कवितायें

एक वो .....
3हर कोना बचपन का।
खुशबू से महका था।
प्यार मुहब्बत से।
आँगन भी खिलता था।
मन के बंटवारों ने।
दीवार उठाली है।
एक वो भी.....
4- प्रज्ञा जीवन संध्या।
बस एक कहानी है।
चाहत भी मिट्टी है।
सम्बन्ध भी पानी है।
रिश्तों की चादर में।
बस जंग लगा ली है।
एक वो.....

प्रवीणा त्रिवेदी
नई दिल्ली

पँछी उड़ते पंख पसार

पँछी उड़ते पंख पसार
कहाँ गई वो शुद्ध बयार
पेड़ों की टहनी बीच
बने घोंसले सभी के
बुनने के नए-नए तरीके
कहाँ है अब पेड़
कट गए सारे सूखी जमीन
टूटी शाखाएं जलीं
रह गई अब छतें
आँगन की गौरैया
अब दिखती नहीं
रहने का कोई आवास नहीं
कहाँ जाएं कहाँ बैठे
जमीं वाले हमसे
रहते अब खुश नहीं
न दिखें बच्चों के खेल
मोबाइल ने कर दी जेल
खाना छोड़ देखें मोबाइल
होगा इनका कैसा भविष्य।
समझ नहीं आता
पँछी है रोता बिलखता
आधुनिक दौर को मन से धिक्कारता।

डॉ अल्पना जैन

हमको दिल्ली दो घुमवाए।

हाय सजनवा चैन ना आए।
हमको दिल्ली दो घुमवाए।।
घर में उमरिया बीती जाए।
अब तो दिल्ली दो घूमवाए।।
चौक चांदनी चांट मैं खाऊं।
गली परांठे वाली जाऊं।
पाव जलेबी झट निपटाउं।
दियो फलूदा भी खिलवाए।।
हमको दिल्ली दो घुमवाय।।
हाट बजार में भीड़ भड़क्का।
रेलमपेल है धक्कम धक्का।
मत होइओ रे हक्का बक्का।
लहंगा मुझको दियो दिलाय।
हमको दिल्ली दो घुमवाय।

सरपट रेल में करूं सबारी।
पहनुं सैंडल, झुमके भारी।
सजी धजी मैं नार तिहारी
पर्स गले में लूं लटकाय।
हमको दिल्ली दो घुमवाय।।

फूल बाग हम घूमें सैंया।
जंतर मंतर ,भूल भुलैया
खेलें दोनों छुपम छुपैया।
फोटो भी तो दियो खिचाय।
हमको दिल्ली दो घुमवाय।।

लाल किला और मंदिर प्यारे।
चढ़ू कुतुब पे करूं नजारे।
करूं नहान यमुना के धारे।
गेट इंडिया का दो दिखलाए।
हमको दिल्ली दो घुमवाय।

डॉक्टर पूनम चौहान
धामपुर बिजनौर उत्तर प्रदेश

मेरे आंसू के सागर में

मेरे आंसू के सागर में
तैर सको तो आ जाना ।
खंड-खंड हो टूटे सपने
जोड़ सको तो आ जाना ।।

पोर-पोर तक सब कुछ डूबा
नयनों के खारे पानी में ।
कितना दुख तुम नाप सकोगे
मेरी दुखद कहानी में ?
राधा के अन्तस् की पीड़ा
तोल सको तो आ जाना ।।

किसी हाट में नहीं बिकी हैं
मेरी दर्दीली मुस्कानें ।
आहत क्रौंच का आर्तनाद
यहां कौन कवि पहिचाने ?
वाल्मीकि की कविता के पट
खोल सको तो आ जाना ।।

कितने दीपक अभी बचे हैं
मेरी डूबी पलकों में ।
किसे जरूरत कौन लखेगा
पीड़ा की उलझी अलकों में ।
अंधकार में चाहत के पर-
तोल सको तो आ जाना ।।

मेरे आंसू के सागर में
तैर सको तो आ जाना।।

डॉ.सारंगादेश 'असीम',
धामपुर (बिजनौर)

एक ग़ज़ल

हमसफर तो मिला मायका रह गया।
दर्द का याद बस ज़ायका रह गया।
बेटियाँ जब गईं छोड़कर मायका,
हर कोई बस उन्हें देखता रह गया।
माँगती बस रही, बोल, दो प्यार के,
साज-सामान सब बस रखा रह गया।
रोशनी बन के आँगन बिखरती रही,
कर विदा में उसे ढूँढता रह गया।
कल तलक जो रही जान बनके मेरी,
आज उस प्रीत का वास्ता रह गया।
अपने घर में रहे बन के लक्ष्मी सदा,
मैं खुद से दुआ माँगता रह गया।
याद आती बहुत है मुझे हर घड़ी,
आँख में बस वही बचपना रह गया।
जीभ पर स्वाद है होंठ पर भी मगर,
खाली कप हाथ में चाय का रह गया।

ऋतुबाला रस्तोगी

मौनता में खड़ा मनुज

मौनता में खड़ा मनुज, मौनता में ताकता ।
देख अपनी ओर, क्यों नहीं धिक्कारता।
है धरा पर क्यों, अश्रु बीज बो रहा ।
अबला अश्रु से निज धरा डुबो रहा ।
बढ़ रहे हैं धरा पर , कलुषित क्लेश मन ।
जाने कितनी सुताओ के, नग्न हो रहे हैं तन ।

निज नीर आसुँओं से ,मुख निर पखारती।
तार-तार चीर से,नग्न देह को ढापती।
कंठ में सुधा नहीं , रुधिर धमनी बचा नहीं।
सांसों में रिक्तता , आत्मदेह विरक्तता।
ठहर मनुज रुक यहीं , ठहर मनुज रुक यहीं

अर्चना चौहान
किरतपुर बिजनौर

मेरे आंसू के सागर में

मेरे आंसू के सागर में
तैर सको तो आ जाना ।
खंड-खंड हो टूटे सपने
जोड़ सको तो आ जाना ।।

पोर-पोर तक सब कुछ डूबा
नयनों के खारे पानी में ।
कितना दुख तुम नाप सकोगे
मेरी दुखद कहानी में ?
राधा के अन्तस् की पीड़ा
तोल सको तो आ जाना ।।

किसी हाट में नहीं बिकी हैं
मेरी दर्दीली मुस्कानें ।
आहत क्रौंच का आर्तनाद
यहां कौन कवि पहिचाने ?
वाल्मीकि की कविता के पट
खोल सको तो आ जाना ।।

कितने दीपक अभी बचे हैं
मेरी डूबी पलकों में ।
किसे जरूरत कौन लखेगा
पीड़ा की उलझी अलकों में ।
अंधकार में चाहत के पर-
तोल सको तो आ जाना ।।

मेरे आंसू के सागर में
तैर सको तो आ जाना।।

डॉ.सारंगादेश 'असीम',
धामपुर (बिजनौर)

दीपावली

आओ यारों मिलकर बैठें
कर लें मीठी बात।
फ्लेतुम या हम पहले में
बीत न जाये रात।

अजगर बनकर सब हैं लेटे
लगता खाये चोट।
मुँह में राम बगल में छूरी
सबके मन में खोट।
वे हम पर,हम उन पर यारों
लगाये बैठे घात।

चहुंदिश घोर अंधेरा फैला
रात अमावस आई।
हर कोने में हुआ उजाला
तभी लक्ष्मी आई।
महल-कुटी हों दोनों रोशन
तभी बनेगी बात।

पढ़ें,बढ़ें,कर्मठ हो जावें
देश की उन्नति होवे।
सब हों सुखी,स्वस्थ,समृद्ध हों
कोई यहाँ न रोवे।
हर आँगन में राम पधारें
खुशियों की बरसात।
दीवाली की रात।

डॉ.सुषमा त्रिपाठी

मेरा मन दिवला सुने घर का

मेरा मन दिवला सुने घर का ,
ना कोई भीतर का साथी न कोई बाहर का।
मेरा मन दिवला सुने घर का।
ना सिर ऊपर छांव किसी की ,
ना रोने को बाह किसी की
निपट अकेली जीवन जैसे प्रेत किसी खण्डहर का।
मेरा मन दिवला सुने घर का।
पल पल हवा करे मनमानी ,
आँख दिखाए बिजली पानी,
छिन छिन कंपे दिए जो जर्जर बेड़ा काल भंवर का।
मेरा मन दिवला सुने घर का।
स्नेह बिना छीजी सब बाती ,जलन बनी जीवन की थाती.,
सिर्फ रात का पाहन है पंछी है बेपर का।
मेरा मन दिवला सुने घर का।
चारो ओर खड़ी दीवारें ,या फिर तम की सघन कतारें,
किसको दो आवाज़ की दिस दिश पहरा है पतझर का।
मेरा मन दिवला सुने घर का।
क्या सोचूँ क्या खोया पाया ,किसने ठुकराया अपनाया ,
हानि लाभ सब एक बने जब डोला उठा सफर का।
मेरा मन दिवला सुने घर का।

पूनम पाण्डे

नारी की व्यथा

नारी हूं मैं नारी की कथा सुनाती हूं,
क्या करती हूं दिन भर,
पुरुषों के इस प्रश्न की आज मैं कथा सुनाती हूं।
तुम कितनी भी देर से सो तुम्हारे बाद ही मुझे सोना है,
तुम कितने भी पहले जागो तुमसे पहले मुझे जागना है,
सालों की यह रीति है सुबह-सुबह बेड टी यानी
चाय का प्याला तुम सबको पकड़ाया है,
नहीं नहीं यह नियम तुमने या विधाता ने नहीं बनाया है,
कर्तव्य से जूझ रही नारी ने,
स्वयं अपने लिए ये नियम बनाया है।
प्रसव वेदना से जूझती नारी देती
जब बच्चे को जन्म ,
उसे तुम्हारे नाम से जाना जाता है
पर उसके छोटे-बड़े काम सब मां करेगी ऐसा माना जाता है।
सुबह को जो तुम जाते हो शाम को आते हो,
दिन भर का मेरा काम कहां तुम देख पाते हो,
बाई लगाकर एहसान जताते हो,
मेरे दो दिन ना रहने पर,
इस बाई पर तुम झल्लाते हो ।
अब बढ़ते पढ़ते बच्चों से भी तुम्हें कोई सरोकार नहीं,
कभी होमवर्क कभी पी टी एम
यह सब भी करा दो यह भी ,
तुम्हें स्वीकार नहीं।
अब आती है बारी तुम्हारे मां-बाप की, हां हां वो हमारे भी
मां-बाप हैं, उनके कामों की गिनती करूं अगर, तो हाथों की
तो छोड़ दो पैरों की उंगली भी कम पड़ जाती हैं,
और अब आती है बारीहमारे मां-बाप की, जो तुम्हारे नहीं हैं
तुम्हारे इसी चक्रव्यूह में फंसकर,
उनसे मिलने कब कब जा पाती थी,
यह सोचकर मेरी आंखें आज भी नम हो जाती हैं।
बहुत लाइन बोल दी मैने आज,
मनकी भड़ास को शब्दों में भरकर, अब कभी न कह सकोगे
क्या करती रहती हो दिन भर।
नारी हूं नारी की व्यथा सुनाई है,
क्या करती हूं दिन भर,
पुरुषों के इस प्रश्न की आज मैंने कथा सुनाई ।

पुष्पा सिंह

क्यों जलाते रावण

क्यों जलाते रावण बतलाओ तुम,
पहले खुद तो राम बन जाओ तुम ।

हर शख्स का मन हुआ मैला ,
चहुँओर छल कपट है फैला,
अपनेपन का स्वाद कसैला,

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य,
सतना ब्यूरो - डॉ ऊषा सक्सेना,
रीवां ब्यूरो - साधना तिवारी,
लखनऊ ब्यूरो - मंजु सक्सेना,
जबलपुर ब्यूरो - शैली सेठ,
लुधियाना ब्यूरो - श्रद्धा शुक्ला,
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,
गोरखपुर ब्यूरो - चित्रा श्रीवास्तव,
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज,
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी,
प्रयागराज ब्यूरो - डॉ आकांक्षा पाल,
भीलवाड़ा ब्यूरो - डॉ राजमति पोखरना,
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,
शिलांग ब्यूरो - डॉ अनीता पंडा,
बिलासपुर ब्यूरो - स्मृति मिश्रा 'रीति,
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,
कानपुर ब्यूरो - सीमा वर्णिका,
भोपाल ब्यूरो - दीपमाला तिवारी,
दमोह ब्यूरो- भावना शिवहरे,
मण्डला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी,
आरा ब्यूरो - सिम्पल सिंह,
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,
पठानकोट ब्यूरो - क्षमा लाल गुप्ता,
सप्तरी नेपाल ब्यूरो - करुणा झा,
धमतरी ब्यूरो - कामिनी कौशिक,
रामपुर ब्यूरो - चंद्रिका कुमार 'चांदनी',,
मुरादाबाद ब्यूरो - अभिव्यक्ति सिन्हा,
कटनी ब्यूरो - मीरा भार्गव,
पटना ब्यूरो - अंजू भारती

शहर समता (हिन्दी साप्ताहिक) के वार्षिक एवं तीन वर्षीय सदस्य बनें।

वार्षिक सदस्यता के लिए -200/- **तीन वर्षीय सदस्यता के लिए -500/-**

कृपया 'शहर समता' के नाम से चेक या आनलाइन भेज सकते है।
IFSC Code- PUNB0100120 A/c.-1001050011592

व्यवस्थापक
शहर समता (हिन्दी साप्ताहिक)
289/238 ए (अनंत भवन) कर्नलगंज ,इलाहाबाद-211002

संरक्षक
स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332 Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

कवितायें

इन सब बुराइयों को मिटाओ तुम,
पहले खुद तो राम बन जाओ तुम ।

सीता क्यों रहती सहमी है,
बहनों की आँखों में नमी है,
बेटी जो अभी अजन्मी है,

कोख में अब सीता न मरवाओ तुम,
पहले खुद तो राम बन जाओ तुम ।

देखो भेड़िए से घूम रहें हैं ,
अपना शिकार ढूँढ रहें हैं ,
लोलुप नयनों से घूर रहें हैं ,

इन बेटियों का मान बचाओ तुम,
पहले खुद तो राम बन जाओ तुम ।

खण्ड- खण्ड सदाचार बिसरा ,
अत्याचार- अनाचार है पसरा,
श्वेत हुआ रक्त का हर कतरा ,

संस्कारों पर फिर नजर घुमाओ तुम,
पहले खुद तो राम बन जाओ तुम ।

यह पनघट क्यों हैं सब खाली ,
परपीड़ा पर देते क्यों हैं ताली,
घूमते खुलेआम दुष्ट मवाली,

मानवता का सबक सिखलाओ तुम ,
पहले खुद तो राम बन जाओ तुम ।

शकुनी पासे फेंक रहे हैं ,
दुर्योधन नयन सेंक रहे हैं,
चीरहरण सब देख रहे हैं,

भीष्म प्रतिज्ञा अब तुड़वाओ तुम,
पहले खुद तो राम बन जाओ तुम ।

सिया भावों के वन भटके ,
स्वर्ण मृग में नैना अटके ,
देवों ने भी खाए झटके,

शबरी के जूठे बेर भी खाओ तुम,
पहले खुद तो राम बन जाओ तुम ।।

सीमा वर्णिका

वक़्त

वक्त का है क्या भरोसा, ये कहां रुक पाएगा?
वक्त ही वक्त में देखो, वक्त गुजरता जाएगा।
वक्त जो निकला है तो ये वापस फिर ना आएगा,
वक्त है यह तो एक दिन इतिहास ही बन जाएगा।
वक्त को हाथों में गर थामो तो यह रुकता नहीं,
रेत का दरिया है हाथों से फिसलता जाए।
वक्त ही वक्त में देखो वक्त गुजरता जाएगा...

आज जिसका वक्त है कल क्या पता फिर हो ना हो,
क्यों व्यर्थ ही गर्व करना इस सुनहरे वक्त का?
वक्त तो है एक परिंदा अगले पल उड़ जाए,
कुर्सियां होंगी वहीं चोला बदलता जाएगा।
वक्त ही वक्त में देखो वक्त गुजरता जाएगा...

जैसा तेरा कर्म होगा फल तू वैसा पाएगा,
तेरी क्या औकात बंदे वक्त यह बतलाएगा।
हौसला होगा जिसमें वो आगे बढ़ता जाएगा,
बनके नदिया की धार ये वक्त बहता जाएगा।
वक्त ही वक्त में देखो वक्त गुजरता जाएगा....

श्रद्धा श्रीवास्तव

परेशाँ हो गया

परेशाँ हो गया बेटा नहीं देखीं किताबें जब।
अरे!तू क्यूँ परेशाँ है वहीं होंगी किताबें सब।
दुखी होकर कहा रघु ने नहीं हैं माँ किताबें अब।
पिता ने बेच खाया फिर शराबों के लिए क्या सब।

गया रोते हुए बाहर खड़े अब्दुल मिले चाचा।
समझ में आ गया उनको कही फिर बात सब साँचा।
किताबें बेंच कर तेरी पिता पी कर चला आया।
मगर चिन्ता नहीं तू कर किताबें मैं सभी लाया।

चला खुश हो तभी देखा वहाँ से सायकिल गायब।
गिरा चाचा चरण में जा दिखा उनमें उसे अब रब।
पढ़ोगे ध्यान से सब तो हमें ये ज्ञान मिलता है।
करोगे प्यार सबसे तो यहाँ सम्मान मिलता है।

सिम्पल काव्यधारा
प्रयागराज

शारदे माँ

नमन करू मां शारदे, विद्या की भंडार।
ज्ञाता है तू वेद की, ममता का है सार।।

हे माँ वीणा वादिनी , कर दो पूरी आस।
कृपा करो माँ भारती, रहूं तुम्हारे पास।।

हाथ जोड़ विनती करूं, हो जीवन उद्धार।
मां मेरी सुन लीजिए, भव से कर दो पार।।

हे मां वीणा वादिनी, करूं तुम्हारा ध्यान।
मातु शारदे तुम मुझे, दे दो यह वरदान।।

शारदे माँ की वंदना, नित करिये अभिराम।
विनय भक्ति से तुष्ट रख ,
जीवन ललित ललाम।।

डॉ पूर्णिमा पाण्डेय 'पूर्णा'
प्रयागराज

न्याय मुझे मिला नहीं

मैं मज़दूर रहा था जज साहब
इस न्यायालय के निर्माण में
लग रहा हूं गुहार कबसे न्याय की आस में
ईंट–ईंट जोड़कर इस मंदिर को बनाया था
कड़ी धूप में जलकर
इस भवन को चमकाया था
उद्घाटन में आए थे बड़े-बड़े मंत्री,
इसी जगह इकट्ठा हुए थे कई जज और संत्री
कहते सुना था मैंने सबको
एक स्वर 'न्याय मिलेगा यही'
13 वर्ष हो गए जज साहब
न्याय मुझे मिला नहीं।

जिस न्याय के मंदिर को मैंने ही बनाया था
उसमें भगवान मुझे अभी तक दिखा नहीं
दान देते–देते वकीलों को हथेली मेरी खाली हुई
और जब हाथ फैला कर मांगा प्रसाद तो सिर्फ
अगली तारीख ही दाखिल हुई
कहते सुना था मैंने वकील बाबू को
एक स्वर 'न्याय मिलेगा यही'
13 वर्ष हो गए जज साहब
न्याय मुझे मिला नहीं।

वह खिड़की जो रौशन कर रही इस कमरे को
वह मेरे इन्हीं हाथों से बनी
सोच तब इतनी–सी ही थी मेरी,
कम से कम धूप पड़े इन फाइलों पर
जो थोक के भाव गट्ठरबंध पड़ी ।
बुद्धि में तब आया था मेरे की
हर रोज सत्य का प्रकाश आए,
ताकि इनमें पड़े–पड़े कहीं कीड़े ना लग जाए
और देर सवेर कभी यह फाइलें खुल भी जाए
तो इनमें से सड़न की गंध ना आए
जज साहब , वह ठेकेदार के फाइल के नीचे
लाल रंग की फाइल मेरी ही पड़ी
रखते हुए बाबू ने कहा था मुझे,
'न्याय मिलेगा यही'
13 वर्ष हो गए जज साहब
न्याय मुझे मिला नहीं।

आज साथ मेरे इस मुकदमे का
गवाह मेरा बढ़ई दोस्त भी आया है
यह जो आपकी कुर्सी के पीछे
'सत्यमेव जयते' गूंथा है
यह इसी ने बनाया है
इसी ने कहा था मुझे
मुकदमा दर्ज करने को
इसी ने बहलाया था मुझे ,
कहा था मुकदमा दर्ज करने को
घर के मुखिया की पगड़ी ,
घर की औरत की चुनरी
बाप की घिसी चप्पल और
दर्द से करहाता मां का आंचल
सबको अकेला इंसाफ दिला सकता है
न्यायालय
कहते सुना था मैंने इस बढ़ई को
'न्याय मिलेगा यही'
13 वर्ष हो गए जज साहब
न्याय मुझे मिला नहीं।

दलीलें देते–देते गवाह पेश करते-करते कुछ
साल और बीत गए जज साहब आखिरकार
न्यायालय की बनावट देखकर खुश हो गए,
सोच बैठे इनाम देने को आज उस मजदूर को
जिसने किया था निर्माण इसका
और सौंप दिया था खुद को
पीछे घूमें, मुस्कुराए ,याद आया बढ़ई दोस्त
'सत्यमेव जयते ' नक्शा था
जिसने आज खड़ा था खामोश
आज तुम्हारे दोस्त का फैसला
उसके हित में ही होगा
सृजन किया जिसने इस मंदिर का,
आज साक्षात् उसे ईश्वर दर्शन होगा
बढ़ई दोस्त की आंखें भर आई
थाम कर सांसें बोला
'मेरा मजदूर दोस्त अब रहा नहीं'
आज सवेरा हुआ या नहीं
अब उसे इसकी परवाह नहीं

जज साहब ने देखी खिड़की
कहा वो लाल फाइल हटा दो
आज स्वयं ईश्वर दर्शन देने आए
तो भक्त अब रहा नहीं
13 वर्ष हो गए जज साहब,
न्याय मिलकर भी मिला नहीं
बहुत देर हो गई जज साहब,
इस न्याय का मतलब अब बचा नहीं,
13 वर्ष हो गए जज साहब
'न्याय मुझे मिला नहीं' ।
13 वर्ष हो गए जज साहब
'न्याय मुझे मिला नहीं' ।

प्रियंवदा शुक्ला
प्रयागराज

दीप जले सुख- शांति पाने के लिए

देश की समृद्धि को बढ़ाने के लिए,
एकता अखंडता को पाने के लिए,
विश्व को यशस्वी बनाने के लिए,
दीप जले सुख- शांति पाने के लिए,
गृह- गृह दीपों की कतार सजेगी,
कण - कण में माँ लक्ष्मी की ज्योति जलेगी,
रोग - शोक ताप को भगाने के लिए,
दीप जले सुख- शांति पाने के लिए ।

कोना- कोना देश का प्रकाशमान हो,
हिंदू- हिंदी हिंद का भी खूब मान हो,
राग - द्वेष दंभ को मिटाने के लिए,
दीप जले सुख- शांति पाने के लिए,

रवि - शशि जब तक द्युतिमान हों,
सारे विश्व में सनातन का सम्मान हो,
उर की ड्योढी पर अल्पना सजाने के लिए
दीप जले सुख शांति पाने के लिए।

पावन -पुनीत सभी आचरण करें,
भूषण का रूप सभी दूषण धरें,
चाटुकारिता को सुलझाने के लिए,
दीप जले सुख- शांति पाने के लिए,

जीवन सभी का ज्योतिर्मय हो,
उर से अज्ञानता का क्षय हो,
वसुधा को स्वर्ग बनाने के लिए,
दीप जले सुख- शांति पाने के लिए

अनामिका तिवारी ' अन्नपूर्णा ',

घर को घर कहने का

घर को घर कहने का अब मन नही करता
जब से उसने रात में दरवाजा दिखा दिया।
जिसको सींचा था हमनें ख्वाहिशों के खून से
उस गुलशन को उसने खंडहर बना दिया।
बिछी हुई थी उसके कदमों में मेरी पाक मोहब्बत
कसीदा गैर का पढ़कर उसने आइना दिखा दिया।
उसकी नज़र में हुस्न का कोई और मोल है
रंगत बदल कर चलना हमको सीखा दिया।
बड़ी शिद्दत से उसके ख्वाब को
फूलों से सजाया था
उसने जर्रे जर्रे में मेरे कांटा बिछा दिया ।

डॉ. मन्जू प्रकाश

मोची

कुच कुच, सूजा करते जाते,
मोची भाई सिलते जाते।,

जूतों की ढूह लगी है,
अभी सिलाई बहुत पड़ी है।
तल्ले पर तल्ले चिपकाते,
बड़े जतन से ठुक ठुक करते।
आंख गड़ाए सिलते जाते,
हां ना में बस उत्तर देते।

किसके पांव चले मखमल पर,
किसके कंकर पत्थर पर।
कौन आदमी कैसा होगा,
कितने कोस चला वो होगा ।
जूते से इंसान परखते,
मोची भाई सिलते जाते ।।

बीए एमए पास किए हैं,
यूनिवर्सिटी टॉप किए हैं।
दौड़ दौड़ के जूते घिसते,
इंटरव्यू सब फेस किए हैं।
अब जूते से भूख मिटाते,
मोची भाई सिलते जाते ।।

घोड़े गधे बनाए जाते,
खच्चर रथ में जोते जाते,
विश्व विजय को प्रस्तुत ये रथ,
अर्जुन भी रण कैसे जीते ?
मन में मंथन करते रहते,
मोची भाई सिलते जाते ।।

गीता सिंह,प्रयागराज

दिल तड़पता है

दिल तड़पता है तुमसे मिलने के लिए
कहां पाऊं तुम्हें मैं बता दो प्रिये
मैंने वादा खिलाफी करी तो नहीं
क्यों कर सजा फिर मुझको मिली
बुझ गए मेरी खुशियों के सारे दिए
दिल तड़पता है तुमसे मिलने के लिए
यादों के भंवर में मैं फसता रहा जल बिन
मछली सा तड़पता रहा
जख्म खुद मैंने अपने आप सीए
दिल तड़पता है तुमसे मिलने।।।।।
सब कहते हैं तू बेवफा हो गई वादा तोड़ कर
तू मुकर गई
ताने गमों के गरल मैं पिए
दिल तड़पता है।।।
आ जाओ पास हमारे तुम लड़ेंगे जमाने से
मिल हम तुम
प्यार करके हमने न गुनाह किये
दिल तड़पता है।।।
जया कहती है प्यार इबादत है
नहीं इसमें कोई अदावत है
भूल जाए हम सारे शिकवे गिले
दिल तड़पता है।।

जया मोहन
प्रयागराज

ख्वाब में मेरे मेरा बचपन

आज ख्वाब में मेरे मेरा बचपन आया
मां बाप मुझे क्या छोड़ चले
भाई रिश्तेदार हुआ
पापा के आंखों का तारा
मां की दुलारी होती थी
भाई से प्यार अनोखा था
दिन रात लड़ाई होती थी
चाचा के संग मेला जाते
बुढ़िया बाल वहां खाते
रंग बिरंगे गुब्बारे सॉन्ग
घर में आकर इतराते थे

जिस आंगन में मैं बड़ी हुई
वह टुकड़ों में बटा हुआ
जिसे जगत पे पुरवाही
चलती थी उस जगत का
नाम निशान मिटा
आम बेर सब खोने लगा
इमली अब दिखती नहीं
काली कल्लो के दाम बढ़े हैं
खलिहानों का पता नहीं

जिस मड्हीं में गुड्डी खेली वह
मड़ई अब दिखी नहीं कहीं
कोई अपना ना दिखा
बेगानों सा गांव लगा
बोली भाषा चाल ढाल पर
शहरी रंग चढ़ा है
दूध दही सब भूल बैठे
चाय कॉफी लत है लगी
कहां मिलेगा बचपन प्यार
यह सोच के दिल मेरा रोया है
आज ख्वाब में मेरे मेरा बचपन आया

ऋजु पाण्डेय

संस्थापित 2001 संस्थापक : स्वर्गीय कन्हैया लाल, स्वर्गीय श्रीमती साधना

हिन्दी दैनिक/हिन्दी साप्ताहिक ◆ संयम ◆ संस्कार ◆ संतुलन

शहर समता

प्रयागराज से प्रकाशित

संपादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

प्रबंध संपादक
अरविन्द पाण्डेय

पंजीकृत कार्यालय: 289/238A, कर्नलगंज, (अनन्त भवन) प्रयागराज- 211002

M.: 9005239332, 9450482227

E-mail: shaharsamta@gmail.com
Website: www.shaharsamta.com